



Original Article

इक्कीसवीं शती के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नरों की समस्याएँ

प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे

शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

Manuscript ID:

IJAAR-C130306

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 22 - 27

Submitted: 16 Jan.2026

Revised: 22 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774620

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774620>



Creative Commons



सार:

किन्नरों की प्रमुख एक मात्र माँग है लोग हमें हिजडा नहीं, इन्सान कहें ! आज समाज को जरूरत है किन्नरों की पीडा से परिचित होने की इसके लिए किन्नरों को समाज के मुख्य प्रवाह में लाना होगा या हमें उस दलदल में उतरकर किन्नरों की पीडा को आत्मसात करना होगा । आज बहुत सारे रचनाकार इस संदर्भ में अपना योगदान दे रहे हैं किन्तु आवश्यकता है इस वंचित ,शोषित और पीडित समुह को अपनाने की ,उन्हें आगे बढ़ाने की। समाज का जो समुह आज हाशिए पर है ,उसे मुख्य प्रवाह में लाने की हमारी जिम्मेदारी है जिससे वे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं । किन्नर विमर्श अन्य विमर्शों की तुलना में अपरिपक्व और बाल्यावस्था में है । आर्थिक ,सामाजिक और शारीरिक विषमता यह किन्नर जीवन के मुख्य पहलु हैं जिससे किन्नर जब आजाद होंगे तब वे सही अर्थ में मुख्य प्रवाह से जुड जाएंगे और यहीं विकास हमारा विकास होगा और हमारे विकास से हिंदुस्तान का विकास होगा ।

मुख्य शब्द: किन्नर, किन्नर विमर्श की अवधारणा, समसामयिक परिवेश, किन्नरों का साहित्य में चित्रण और किन्नर जीवन की विषमताएँ आदि ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे. (2026). इक्कीसवीं शती के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नरों की समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 22 - 27. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774620>

प्रस्तावना:

‘ जिनकी लबों पर होती है दुआएँ सदा

इनके साथ होता है तिरस्कार सदा!’¹

जर्मन ग्रीर द्वारा लिखित ‘द फिमेल इयूच(1970)

अंतर्राष्ट्रीय बेस्ट सेलर बुक है और प्रियबाबू का ‘ नान

वारवानाम अल्ला’(2007), यह ट्रान्स जेन्डर पर लिखी हुई पुस्तकें हैं । हिन्दी भवन भोपाल में 23 -24 जुलाई 2016 के दिन ‘ समकालीन उपन्यासों में थर्ड जेन्डर की सामाजिक उपस्थिति ‘ विषय पर मन्तव्य में प्रो. शरद सिंह ने यह घोषित किया , ‘इस मंच से थर्ड जेन्डर विमर्श को आरंभ किए जाने



की मैं घोषणा करती हूँ।' उस दिन से सही मायने में हिंदुस्तान में किन्नर विमर्श का आगाज हुआ ऐसा हम मानते हैं। इन रचनाओं का किन्नर विमर्श के संदर्भ में बार-बार उल्लेख किया जाता है जब की हिंदुस्तान के परिप्रेक्ष्य में, नीरजा माधव का 'यमदीप' (2002), मोहन रुपडा का 'प्रतिसंस्कार' (2008), अनुसया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ' (2008), ए. रेवती का तमिल से अनुदित 'ए हिजरा लाइफ' (2010) प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली' (2011), महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' (2011), निर्मल भूराडीया का 'गुलाम मंडी' (2014), महेंद्र भीष्म का 'मैं पायल हूँ' (2016), चित्रा मुदगल का 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नालासोपारा' (2016), भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50-50' (2017), गीतांजलि श्री का 'रेत समाधि' (2018), मोनिका देवी का 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' (2019) आदि उपन्यास रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं उपन्यासों को केन्द्र में रखते हुए किन्नर समस्याओं पर अपनी बात प्रस्तुत की है और यह सारे उपन्यास किन्नर जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान शती से सही मायने में इस देश में किन्नर विमर्श पर मंथन शुरू हुआ और गद्य व पद्य की लगभग सभी विधाओं में अनेक रचनाकारों ने किन्नर चित्रण किया है। आलेख लेखक ने अपनी सुविधा के लिए केवल उपन्यास विधा का चयन करते हुए किन्नर समस्याओं पर अपनी बात को रूपायित और रेखांकित किया है।

समसामयिक परिवेश में नित नए विमर्श उजागर हो रहे हैं। आज का बहुचर्चित विमर्श किन्नर विमर्श है जिसकी शुरुआत इस शती के आरंभ से हुई है ऐसा कई विचारक मानते हैं अर्थात् इसका अर्थ यह नहीं है की किन्नरों का चित्रण वर्तमान शती से शुरू हुआ अपितु आज से 65 वर्ष पूर्व ही इसका आगाज हुआ था ऐसा हम मानते हैं। जब हम प्राचीन

साहित्य का विशेषतः रामायण, महाभारत और विविध पुराणों का अध्ययन करते हैं तब किन्नरों के संदर्भ में बहुत सी जानकारी हमें प्राप्त होती है जिससे यह स्पष्ट होता है की किन्नरों का अस्तित्व प्राचीन काल से इस देश में हैं और आज भी हमें नजर आता है। किन्नर वें होते हैं जो न नर होते हैं और न नारी अर्थात् लैंगिक विकृति के कारण उनकी देह में अविश्वसनीय परिवर्तन होते हैं और यह प्रजाति अपने आप को कोसते हुए कहती है –

‘न ही नारी हूँ मैं और नर नहीं हूँ

विवश हूँ मूक हूँ पत्थर नहीं हूँ!’²

नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास किन्नरों के सामाजिक स्थान को स्पष्ट करता है। इस रचना का प्रमुख पात्र नंदरानी ऊर्फ नाजबीबी है जो लैंगिक विकृतियों के कारण अपने घर से बाहर निकलती है और गुरु महताब के यहाँ पनाह लेती है। एक दिन उसे पता चलता है कि उसकी माँ कैसर से पीडित है इसलिए वह अपनी माँ से मिलने के लिए अपने घर जाती है और रास्ते में खुद को कोसते हुए वह कहती है- 'मम्मी, मैं आप लोगों की बदनामी के कारण अपनी दुनिया में चली आई हिजडों की दुनिया में ...मेरा हाथ या पैर अपंग होता, दिमाग खराब होता, तो भी शायद तुम रख सकती थी मुझे लेकिन।' ³ घर पहुँचते ही उसे पता चलता है कि उसकी माँ की आज ही मृत्यु हुई है और वह दौड़ते-भागते स्मशान पहुँचती है लेकिन अपनी माँ का अंतिम दर्शन उसकी तकदीर में नहीं होता क्योंकि माँ की देह पर अग्निसंस्कार हो चुके थे। वह इसपर नापसंदी जाहिर करती है तो नाजबीबी के पिता उसकी आलोचना करते हैं। तब वह वापसी के लिए निकलती है लेकिन वह अपने भाइयों को पिता का ध्यान रखने की नसिहत देते हुए पिता के द्वारा की गई आलोचना को नजर अंदाज करते हुए अपने अंदर



की मानवीयता का परिचय देती है जिससे उसके हृदय की गहराई स्पष्ट होती है।

अनुसूया त्यागी कृत ‘ मैं भी औरत हूँ ’ इस उपन्यास में पैदाइशी बच्चे में लैंगिक विकास के न होने के कारण बच्चों में जो लैंगिक विकृतियाँ उभरती हैं उसका लेखिका ने मनोयोग से चित्रण किया है। लेखिका खुद स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं इसलिए उनके लेखन को शारीर शास्त्र का भी आधार है। इस रचना में उन्होंने मानवी शरीर की संरचना के संदर्भ में जो लिखा है उसका ठोस धरातल भी है जिसे पढ़ने के बाद किन्नरों के प्रति संवेदनाएँ उजागर हो जाती हैं। इस उपन्यास में दो सगी बहनों की मंजुला और रोशनी की जीवन कहानी है। शल्य कर्म के माध्यम से किसी को भी साधारण स्त्री या पुरुष बनाया जा सकता है यह लेखिका के मन में विश्वास है। रोशनी के साथ बलात्कार होता है जिसे लेखिका के शब्दों में- ‘ रोशनी ऐसे ही पेड़ों की ओट लेकर बैठ जाती थी शौच से निवृत्त होने। ज्यों ही वह पेड़ की आड़ में बैठने लगी, उसने चार-पाँच लडकों को पास की एक झाड़ी के पास खड़े देखा तो वह सहम-सी गई। वह अपना लोटा उठाकर जाने लगी। इतने में ही दो लडकें उसकी ओर दौड़े, ’ अरे ठहर साली, कहाँ जाती है ? बड़ी मुश्किल से आज हाथ लगी है। ’⁴

ऑपरेशन के बाद मंजूल का डॉ.विपिन के साथ विवाह हो जाता है और उसे पुत्रप्राप्ति हो जाती है जब कि रोशनी एक कंपनी की सीइओ बन जाती है। उसका विवाह ओंकार के साथ हो जाता है लेकिन वह संतान की स्नेह से वंचित रह जाती है इसलिए ओंकार उसे कहता है – ‘ रोशनी यह नियति ने तुम्हारे साथ बहुत क्रूर मजाक किया है, पर फिर भी भगवान को धन्यवाद दो कि उन्होंने तुम्हें इतना अच्छा दिमाग, इतना सुन्दर चेहरा व इतना अच्छा दिल दिया है। अरे क्या

हुआ जो उसने तुम्हें गर्भाशय नहीं दिया ? हम इस समस्या को आसानी से हल कर सकते हैं। ’⁵

हाशिए के अन्य विमर्शों की तुलना में किन्नर विमर्श अभी बाल्यावस्था में है और उनकी समस्याओं का उतना गंभीर अध्ययन नहीं हुआ है जिसकी अपेक्षा है इसलिए डॉ. पुनीत बिसरिया ने लिखा है – ‘यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य और समाज की मानसिकता में अभी किन्नर विमर्श बेहद अपरिपक्व तथा पूर्वाग्रहपूर्ण व्यवस्था में है, समाज की वैचारिकी अभी इन्हें स्वीकार करने में हिचक रही है। फिर भी यह तो मानना ही होगा कि दिन प्रति दिन खुल रहें और विकसित होने वाले समाज ने अब इन्हें थोड़ा सा ही स्पेस देना शुरू कर दिया है और शीघ्र ही हम वह दिन भी देखेंगे, जब से समाज में सामान्य लोगों की भाँति अपने मानवाधिकारों के साथ जीवन-यापन कर सकेंगे। ’⁶ साहित्यिक दृष्टि कोण से उनका यह कथन सही प्रतीत होता है।

चित्रा मुद्गल का ‘पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा ’ यह उपन्यास एक किन्नर विनोद की जीवनयात्रा बिन्नी ऊर्फ विमली के मुकाम पर कैसे पहुँचती है और उसका अन्त किस प्रकार हो जाता है इस बात की पुष्टि करता है। इस संपूर्ण उपन्यास में विनोद अपनी माता के नाम खत लिखता रहता है लेकिन माँ की ओर से एक भी पत्र नहीं आता और अन्त में माँ खत लिखती है लेकिन तब तक काफी देर हो जाती है और विनोद की जीवनयात्रा समाप्त हो जाती है। पुलिस के अनुसार विनोद किसी गँगवॉर का बलि है किन्तु इस रचना का पाठक आसानी से विनोद की आत्मघात का अनुमान कर सकता है। मुंबई के अखबार में एक समाचार प्रकाशित होता है- ‘ कुर्ला मलिना कॉम्प्लेक्स से लगी हुई मीठी नदी में पुलिस ने एक फूली लाश बरामद की है। शव की शिनाख्त नहीं हो पाई है। ’⁷ किन्नर भी मनुष्य ही होते हैं और वें किसी दया के मोहताज नहीं



होते अपितु इनकी समस्याओं को दूर करना हमारा फर्ज है इस तथ्य को लेखिका ने रूपायित और रेखांकित किया है।

महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' यह उपन्यास भी किन्नर समस्याओं का चित्रण करता है क्योंकि किन्नर का जन्म एक अभिशाप से कम नहीं है और यहीं समाज की भी अवधारणा है इसलिए जब घर में कोई किन्नर संतान पैदा होती है तो उसकी ओर देखने की नजर समाज में एक समान होती है जिसे हम सब जानते हैं। ठाकुर जगतसिंह के यहाँ निरंजना का जन्म होता है और उसे जब निरंजना की असलियत का पट चलता है तो वह क्रोधीत होकर दिवान पंचमसिंह से कहता है – 'क्या कहेगा समाज? थूकेगे लोग उस पर हँसेंगे उसके वंश पर कि एक हिजड़ा पैदा किया है ठाकुर जगतसिंह ने!' ⁸ इस उपन्यास की और एक विशेषता यह है कि हिजड़ों में असली और नकली दो वर्ग होता है इस बात को लेखक ने स्पष्ट किया है। जो जन्म से पैदा हिजड़े होते हैं वह लैंगिक विकृति के कारण किन्तु समाज में अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु कुछ हिजड़ा बन बैठे हैं जिसका लेखक को अफसोस है इसलिए इस रचना का एक पात्र नगीना कहते हुए नजर आती है – 'आज साला कोई नामर्द रंडूवें तीन-तीन बच्चों के बाप बन बैठे हैं और साड़ी पहनकर सर हक मारने पर तुले हैं! इनको बहुत शौक है हिजड़ा बनने का, जाओ सालो बहुचर माई अगले जन्म में तुम सभी की मुरादे पूरी कर दे, तब जानेंगे हिजड़ा होने का दर्द क्या होता है?' ⁹

भगवंत अनमोल का 'जिन्दगी 50 -50' में भी लेखक ने किन्नर जीवन की त्रासादियों को प्रस्तुत किया है। गोपालपुर के जमीनदार के यहाँ दो संतानें थी अनमोल और हर्षा जिसमें हर्षा दुर्भाग्य से किन्नर था इसलिए जमीनदार चिंतित रहता था। उसी नगर में कस्तुरी नामक किन्नर रहता था जो हर्षा के बाप को बार-बार कहता था – 'हिजड़े का बाप है

तू हिजड़े का और इतना आसान नहीं है समाज में एक हिजड़े का बाप बनकर जीना। सुई की नोक पर रहना होता है ...यह समाज तुझे जीने नहीं देगा।' ¹⁰ इस बात से यह स्पष्ट होता है कि किन्नर जीवन कितना मुहाल और मुश्किल होता है क्योंकि एक मानव के रूप में उन्हें जीवन यापन करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं होता।

प्रदीप सौरभ की 'तीसरी ताली' यह उपन्यास भी किन्नर जीवन के त्रासादियों को ही स्पष्ट करती है। यह कथा है गौतम और आनन्दी की जिनके यहाँ बच्चा पैदा होता है लेकिन नेग के लिए आए हुए किन्नरों के लिए वें द्वार तक नहीं खोलते क्योंकि उनकी जेहन में यह डर समाया हुआ था कि किन्नर उनकी संतान को उठाकर ले जाएंगे। आर्थिक विषमता किन्नर जीवन का एक पहलु है जिसके कारण वें भीख मांगने के लिए अभिशप्त हैं जैसे- 'मैं मर्द रहूँ औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ। इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता, पेट की आग तो न जाने बड़े-बड़ों को क्या-क्या बना देती है?' ¹¹

महेंद्र भीष्म का 'मैं पायल हूँ' की भूमिका में लेखक ने लिखा है- 'मैं पायल का आधार किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष की गाथा है जिसमें प्रत्येक किन्नर के अतीत के संघर्ष की झलक परिलक्षित होती है। विस्थापन का दंश कष्टकारी होता है, फिर वह चाहे परिवार, समाज या अपनी मिट्टी से किया हो।' ¹²

'अस्तित्व की तलाश में है सिमरन' (2019) मोनिका देवी का उपन्यास है। सिमरन का मूल नाम शत्रोहन अर्थात् शत्रुओं का नाश करने वाला था लेकिन जैसे-जैसे बढ़ती उम्र के साथ उसमें जो परिवर्तन आते हैं, उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और वह हताश, निराश हो जाती है। हर किन्नर की जो नियति है वहीं सिमरन का भी पाथेय है इसलिए वह उदास होकर अपने मन से ही सवाल करती है- 'मुझे यह



मिथक तोड़ना है किन्नर सबसे पहले एक इन्सान है। हमको अवसर मिलें तो पढ़-लिखकर रोजगार कर सकते हैं। वक्त के साथ कुछ सोच बदल जाएगा तब जाकर देखना किन्नर भी बहुत कुछ बन सकता है, उसको तलाश है तो सिर्फ अपनेपन की, उन हाथों की जो आगे आकर कहें यह हिजड़ा नहीं मेरा बेटा है- या मेरी बेटी है। ऐसा कोई मिल जाए तो हम अपना भाग्य संवार सकते हैं।¹³

गीतांजलि श्री का बहुचर्चित उपन्यास 'रेत समाधि' (2018) किन्नर जीवन की परेशानियों को उद्घाटित करता है। इस उपन्यास का एक पात्र रोजी है जिसे अत्याचारों का सामना करना पड़ता है और उस कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस उपन्यास की चंदा कहती है 'रोजी ने अपना दिवंगत शरीर मेडिकल रिसर्च के लिए अस्पताल को दान किया है। माँ का कथन किसी कानूनी वसीयत से कम नहीं था, उसका दाह संस्कार यों हुआ। धर्म संस्कार यों गायब रहा।'¹⁴

इस तरह रोजी पाठकों के स्मृतियों में रहती है क्योंकि अपनी मौत के बाद भी उसने अपना शरीर मेडिकल रिसर्च के लिए अस्पताल को दान दिया था। यहां लेखिका ने दाह संस्कार और धर्म संस्कार दोनों में जो अंतर होता है उसे स्पष्ट किया है। किन्नर जीवन भर संघर्ष करते हैं लेकिन रोजी ने मृत्यु के पश्चात भी समाज की सेवा हेतु अपनी देह दान की और इसी कारण रोजी को भूलना असंभव है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विवेचन से यहीं स्पष्ट होता है कि किन्नर भी मानव ही हैं और उन्हें भी साधारण मानव के रूप में जीने का अधिकार है। किन्नर विमर्श अन्य विमर्शों की तुलना में अभी भी अपरिपक्व और बाल्यावस्था में है। आज भी किन्नरों की समस्याओं पर विचार मंथन की जरूरत है और जितना सोच

विचार होगा उतने ही नए तथ्य उजागर होंगे। यमदीप (2002) से शुरू होने वाला यह सफर वर्तमान शती के 2026 तक विगत 24 वर्षों का यह सफर है। अनेक रचनाकारों की अपनी-अपनी रचनाओं से किन्नरों की कथा, व्यथा, संघर्ष और वेदनाओं का चित्रण किया है किन्तु इसे समझने के लिए एक संवेदनशील मन की जरूरत होती है लेकिन दुर्भाग्य से आज भी समाज के पास वह संवेदनशील मन नहीं है इसलिए जैसे किन्नर समाज हाशिए से मुख्य धारा में आएगा, स्वयंमेव समाज की अवधारणा बदल जाएगी और समाज का किन्नर वर्ग की समस्याओं की ओर देखने का दृष्टिकोण भी बदल जाएगा और यहीं पहल समाज को आगे ले जाएगी और किन्नरों के जीवन में जो आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक विषमताएँ नजर आती हैं वह समाप्त होगी। अन्ततोगत्वा हिंदुस्तान का सामाजिक विकास भी होगा।

संदर्भ संकेत:

1. गुप्ता सानिया – साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किन्नर विमर्श, गीना प्रकाशन, भिवानी प्रथम संस्करण 2016 पृ. 30
2. वहीं पृ. 57
3. माधव नीरजा- यमदीप, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012 पृ. 30
4. त्यागी अनुसूया- मैं भी औरत हूँ, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली प्रथम संस्करण 2008, पृ. 10
5. वहीं पृ. 86
6. गुप्ता सानिया – साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किन्नर विमर्श, गीना प्रकाशन, भिवानी प्रथम संस्करण 2016 पृ. 86
7. मुदगल चित्रा-पोस्ट बॉक्स नं 203, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2016 पृ. 224
8. भीष्म महेंद्र- किन्नर कथा, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2011 पृ. 24



- | | |
|---|--|
| 9. वहीं पृ .118 | 12. भीष्म महेंद्र- मैं पायल हूँ, अमन प्रकाशन ,कानपुर प्रथम संस्करण 2016 पृ . 05 |
| 10. भगवंत अनमोल – जिंदगी 50-50, राजकमल एन्ड संस, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पृ . 42 | 13. मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में है सिमरन ,माया प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण 2019, पृ .100 |
| 11. प्रदीप सौरभ- तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पृ . 05 | 14. गीतांजलि श्री- रेत समाधि, राजकमल एन्ड संस, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2018 पृ .256 |